(2)

हिमालय के अमर आराधक—1

हिमालय हमारे लिए मात्र एक पर्वत नहीं है। हिमालय युगों से भारतीय संस्कृति और साहित्य को अनुप्राणित करता रहा है। असंख्य कलाकारों ने हिमालय के मनोरम चित्र अंकित किए हैं, कुछ ने शब्दों में तो कुछ ने रंगों और तूलिका से। हिमालय के सौन्दर्य को अपने चित्रों में अमर करने वाले रूसी चित्रकार निकोलस रोरिख और भारतीय चित्रकार सरदार सोभा सिंह की कला-यात्रा को जानना रोचक भी है और आनन्दमयी तथा शिक्षाप्रद भी।

संपादक

(क)

निकोलस रोरिख : हिमालय की आत्मा के शिल्पकार

—प्रयाग शुक्ल

अपने जीवन काल में लगभग 7000 चित्रों की रचना करने वाले प्रो० निकोलस रोरिख के बारे में दो बातें निर्विवाद रूप से बराबर स्वीकार की गई हैं यह कि वह असाधारण क्षमता वाले व्यक्ति और कलाकार थे, और यह कि उनकी कला को शब्दों के माध्यम से समझ और समझा पाना कठिन है। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपने एक पत्र में उन्हें लिखा था "आप (यानि आपकी कला) को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता - उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है।" इसी पत्र में उन्होंने यह भी लिखा था कि "जब एक कला माध्यम की कृति दूसरे कला माध्यम के द्वारा पूरी तरह 'व्यक्त' की जा सकती हो तो मानना चाहिए कि वह असफल है।"

लेकिन कैसी मज़बूरी है कि शब्द और रंग के बीच के अन्तर को समझते हुए भी हम चित्रकला को शब्दों के माध्यम से भी समझना और जानना चाहते हैं। आंखें जो कुछ देखती हैं, हम सोच-विचार के द्वारा उसके मर्म तक भी पहुँचना चाहते हैं। इसमें हमें पूरी सफलता कभी नहीं मिलती, और देखें तो हम कभी सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से ऐसा करते भी

नहीं हैं। चाक्षुष अनुभव को और अधिक गहरा करने के लिए ही हम शब्द और रंग के फासलों को कुछ कम करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रो० रोरिख की कला को समझने-सराहने में मेरे ख्याल में सबसे अधिक मदद इस तथ्य से मिल सकती है कि उनकी प्रतिभा और क्षमता दरअसल कई कलाओं के मेल से तैयार हुई थी। वकील पिता के पुत्र, रोरिख भी पहले वकील बनने वाले थे, लेकिन उनका झुकाव अंततः कला की ओर हुआ, फिर पुरातत्व, कविता, साहित्य, मूर्तिशिल्प, वास्तुशिल्प, इंजीनियरी, संगीत, दर्शन, विज्ञान आदि एक-एक करके उनकी रुचियों की परिधि में आते गये। रोरिख की चित्रकला को इन सबका लाभ मिला। यह आकस्मिक नहीं है कि रोरिख की चित्रकला में स्थापत्य, कविता, नृत्य-संगीत की लय आदि समाहित ही नहीं मिलते, वे जैसे उनकी संरचना में भी मुखर हैं। जहाँ तक विषयों का सवाल है, रोरिख की कला मूलतः प्रकृति पर बहुत हद तक निर्भर रही है। इस तरह देखें तो रोरिख की कला धरती और आकाश के बीच के तारों को जोड़ने वाली कला है— असीम को अपनी संवेदना का एक अत्यन्त अनुभूत अंग बना लेने का प्रयत्न है। रोरिख की कला में विराट और असीम को ग्रहण करने का उत्तेजक साहस ही उनकी कला को अविस्मरणीय बनाता है। यह फिर गौर करने वाली बात है कि उन्होंने पहाड़ों को न केवल अपनी कला का अंग बनाया बल्कि अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा भी बनाया - इनके बीच उन्होंने दुर्गम यात्राएं कीं और निवास भी किया। पहाड़ जो विराट हैं, और जिनके ऊपर केवल असीम आकाश है, रोरिख ने इनका इस्तेमाल कभी प्रतीकों के रूप में नहीं किया, लेकिन धरती, पहाड़, आकाश, जल और वनस्पतियों में आदमी के अब तक के जीवन की कौन-सी स्थिति है, जो हमें नहीं मिल जाती। रोरिख की कला, कहीं गहरे में, सृष्टि को समझने की भी कला है। वह अनिवर्चनीय अनुभव को बार-बार प्रत्यक्ष करना चाहते हैं, अपने चित्रों द्वारा हमारे आपके सामने रखना चाहते हैं। लगभग उसी तरह, जिस तरह कि प्रकृति अपने को बार-बार बदल कर अपने अनिवर्चनीय अनुभव को हमारे लिए प्रत्यक्ष करती है। रोरिख के चित्र प्रकृति के दृश्य-लेखों से होड़ लेते हैं। रूसी अंतरिक्ष यात्री यूरी गगारिन ने अंतरिक्ष में उड़ान भरते हुए कहा था, ''यहां से दृश्य रंग निकोलस रोरिख के चित्रों की याद दिलाते हैं।''

प्रो० रोरिख अपनी रंग-सामग्री को प्रायः स्वयं ही तैयार करते थे - सूखे रंग-चूर्ण में 'घोल' मिलाकर। उनके प्रायः सभी चित्र 'टेपेरा' पद्धति से तैयार किए गए हैं। निकोलस रोरिख के चित्रों में 'सघनता' भी है और उनका छायात्मक रूप भी बर्फीला, सफेद, आसमानी, नीला, एक दूसरे को प्रभावित करते अन्य रंग - एक 'पूरे' वातावरण की सृष्टि करते हैं। उनके चित्र, मानों चित्र ही न रहकर एक जीता-जागता दृश्य बन जाते हैं - जिन्हें देखते ही हम जैसे एक और ही लोक में पहुंच जाते हैं। इस बात का उल्लेख कर देना अत्यन्त ज़रूरी है कि प्रो० रोरिख के तमाम चित्र अपना एक ऐसा चित्रलोक बनाते हैं, जो अत्यन्त निजी है लेकिन

जो हमारे परिचित जगत से कहीं मिलता जरूर है और उसमें आदमी की ही वास्तविक और काव्यात्मक चिंताएं हैं। प्रो० रोरिख के चित्रों में जैसे अतीत वर्तमान दो दुनियाएं नहीं हैं--- इसीलिए कई बार हमें उनमें एक प्रकार की रहस्यमयता मालूम पड़ती है। फिर याद करें कि निकोलस रोरिख के अधिकतर चित्रों का मूल आधार 'पहाड़' है -- वह भी हिमालय की पर्वत-शृंखलाएं और पहाड़ में अतीत और वर्तमान दोनों किस तरह समाहित हैं। पहाड़ों के सामने खड़े होने पर हम ज्ञात-अज्ञात रूप से जैसे काल के बारे में नयी तरह से सोचना शुरू करते हैं -- काल और स्पेस दोनों के ही बारे में हम अनुभव करते हैं कि हम काल की निरन्तरता में जी रहे हैं। एक क्षण के लिये यह स्थिति हमें स्तब्ध कर देती है -- लेकिन फिर हम जैसे अस्तित्व के प्रश्नों से उलझने लगते हैं। रोरिख का एक चित्र है : 'दूर देश के आगत'। यह दूर देश जाहिर है कि केवल भौगोलिक दूरी को संकेतित नहीं करता, वह जैसे काल की दूरी को भी संकेतित करता है : अतीत को वर्तमान से जोड़ देता है एक झटके के साथ नहीं गोपन और अर्थवान ढंग से। एक बात की ओर और ध्यान दें -- रोरिख के चित्रों में अधिकतर पर्वतों और प्रकृति के दृश्यालेख ही हैं लेकिन इनमें से बहुतों के बीच आकृतियां भी हैं : पर्वतीय दृश्यों के बीच साधु, ग्रामीण युवतियां आदि हैं, पर्वतीय और प्रकृति दृश्यालेखों के बीच कई बार उन जगहों का भी अंकन है जिनमें कि कोई न कोई निवास करता है : मठ, मन्दिर आदि का यानि रोरिख की कला निरी प्राकृतिक दृश्यों और पर्वतमालाओं की कला नहीं है, जैसा कि जाने-अनजाने प्रचारित हो गया है। उनकी कला में आदमी की न केवल उपस्थिति है -- प्रकृति और आदमी के अन्तरसम्बन्धों की कई स्तरों पर मर्मभरी पहचान भी देखने को मिल सकती है।

अपने जीवन में खोजी और यात्री, रोरिख अपनी कला में भी कई स्तरों पर खोजी रहे हैं। पर्वतमालाओं को लेकर रचे गये चित्रों में ही हम काफ़ी विविधता पाते हैं। वह पर्वतमालाओं के साक्ष्य से ही गहराई, विस्तार की कलात्मक और सौन्दर्यात्मक प्रतीतियां करा सके हैं। यहीं नग्गर में रोरिख गैलरी में जो चित्र हैं, उनमें से कुछ पर्वतशिखर जैसे पंखड़ियों पर खिले हुए अत्यन्त मनोरम मालूम पड़ते हैं। रोरिख चित्रों की एक सुचिंतित स्थापनत्रय गढ़ते थे और कभी-कभी अत्यन्त मुक्त ढंग से, अमूर्तन की हदें छूते हुए पर्वतमालाओं के चित्र रचते थे। रोरिख के बारे में यहां एक बात का स्मरण कर लेना अत्यन्त ज़रूरी है कि वह किसी कला आन्दोलन से जुड़े हुए कलाकार नहीं थे। उन्होंने बराबर अपनी ही राह पकड़ी। रूसी लेखक लिओनिद आंद्रे ने सही ही लिखा था "यह बराबर अपने लोक में रहते हैं और उससे बिलग नहीं होते।"

दरअसल प्रो० रोरिख उन महान कलाकारों में थे जो अपनी कला प्रतिभा को किसी एक भावना के प्रति समर्पित कर देते हैं और उस भावना के लिए आजीवन काम करते हैं। उनके

सन्दर्भ में यह भावना थी -- हिमालय की उपत्यकाओं और पर्वतशृंखलाओं का चित्रांकन है। उन्होंने लगभग बीस वर्ष कुल्लू में इसी भावना को रूप देने में बिताये और फिर आजीवन यहीं रहे। वैसे निकोलस रोरिख की कला यात्रा रूस में ही प्रारम्भ हुई थी और 1923 में भारत आने से पहले वह न केवल बहुत से चित्रों की रचना कर चुके थे, एक चित्रकार के रूप में रूस के महान लेखकों और कलाकारों के सम्पर्क में भी आ चुके थे। 'युद्ध और शान्ति' के महान लेखक ताल्सताय और अपने समय के बहुत बड़े रूसी रंगकर्मी स्तानिस्लावस्की उनके परिचित थे। भारत आने से पहले रूस में ही, वह जैसे एक अटल संयोग से भारत और उसकी कला से एक हद तक परिचित हो चुके थे। उन्होंने सेंट पीटर्सवर्ग के अपने मकान में पर्वतशृंखलाओं का एक चित्र टंगा देखा था -- यह चित्र कंचनजंघा का था। निकोलस रोरिख इसे देखकर मुग्ध हुए। 1906 में उन्होंने 32 वर्ष की आयु में अजन्ता की दो आकृतियों का अंकन किया। भारत आने से पहले ही वह विवेकानन्द के दर्शन को और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएं पढ़ चुके थे। भारत के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता ही गया और अन्ततः 1923 में वह अपने बड़े बेटे यूरी और पत्नी के साथ भारत आये। यूरी स्वयं पुरातत्ववेत्ता थे और प्राच्यविद भी। 1925 में हिमालय की उपत्यकाओं और पर्वतशृंखलाओं की वह यात्रा शुरू हुई जो उनकी कला और उनके जीवन के लिए निर्णायक साबित हुई। जैसा कि जवाहरलाल नेहरू ने कहा था : 'हिमालय की बहुतेरी पर्वतशृंखलाओं के इन चित्रों को जब हम देखते हैं तब ऐसा लगता है जैसे हम इन महान शिखरों की आत्मा में प्रवेश कर रहे हों-- उन शिखरों की आत्मा में जो भारत भूमि के सिरहाने सदियों से उसके प्रहरी बनकर खड़े हुए हैं। वे हमें हमारे इतिहास, ज्ञान और संस्कृति की धरोहर की ही याद नहीं दिलाते बल्कि अतीत की ही याद न दिलाकर उसकी याद दिलाते हैं, जो भारत के संदर्भ में स्थायी और अक्षय है। इसीलिए हम निकोलस रोरिख के प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर किये बिना रह ही नहीं सकते, जिन्होंने कि अपने इन मूल्यवान चित्रों में उस भावना को साकार कर दिया है।'

सुप्रसिद्ध कला समीक्षक एम०एस० रंधावा ने लिखा है, ''उनके चित्रों और रचनात्मक जीवन ने विश्व के सांस्कृतिक मान-चित्र पर कुल्लू को प्रतिष्ठित कर दिया है।''

रोरिख ने हिमाचल की विराट पर्वतशृंखलाओं के जो चित्र रचे हैं वे अपने आकार में बहुत बड़े नहीं हैं। लघु और सामान्य आकार के चित्रों में ही उन्होंने हिमालय की आत्मा और रूप को हमारे लिए बोधगम्य बना दिया है। इससे फिर यही प्रमाणित होता है कि उन्होंने हिमालय के साथ किस हद तक अपने जीवन और कला की संगति बिठा ली थी।

भारत आने से पहले रोरिख ने रूस में जिन चित्रों की रचना की थी, उनमें हम नदी, मल्लाह और नौका-यात्रियों से सम्बन्धित चित्र भी पाते हैं। उनके चित्रों में वनस्पतियों को भी बराबर स्थान मिलता रहा है। हम यहां एक मर्मभरा नतीजा निकाल सकते हैं : यही कि रोरिख

जैसाकि हम सब जानते हैं प्रो० रोरिख के सुपुत्र श्री स्वातोस्लाव रोरिख ने भारत में रहकर उनके उद्देश्य को आगे बढ़ाया है। वह स्वयं एक समर्थ चित्रकार हैं और हिमाचल को उन्होंने भी अपना प्रेरणा स्त्रोत बनाया है। रोरिख की अधिकतर कलाकृतियां अब विदेशों में हैं--रूस, अमेरिका आदि में लेकिन भारत में उनकी जो कलाकृतियां रह गयी हैं--वे उनके काम का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ हैं। हम आशा करें कि प्रो० रोरिख की कला किसी न किसी रूप में भारत के लिये बराबर प्रासंगिक रहेगी और एक प्रेरक तत्त्व का काम करती रहेगी।

(ख)

भारतीय संस्कृति एवं कलाओं के आराधक : निकोलस रोरिख

डा० अलेना आदामकोवा

हिमालय के सौंदर्य के अद्भुत चित्रकार एवं हिमालय की महिमा के गायक निकोलस रोरिख ने अपनी डायरी में हिमालय का गुणगान करते हुए लिखा :-

हिमालय।
यहीं है; ऋषियों का आवास।
यहीं गूंजी थी कृष्ण की वंशी।
यहीं गाया गौतम ने गान।
यहीं आकार लिया वेदों ने।
यहीं थी पाण्डवों की शरणस्थली।

***

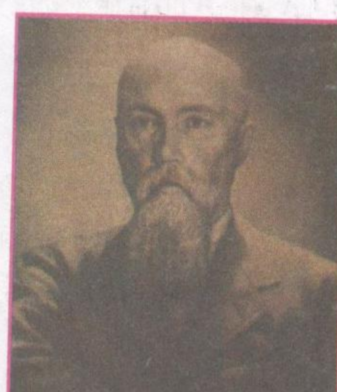

(निकोलस रोरिख)
1874-1947

भारत का रत्न हिमालय !
हिमालय विश्व की निधि अभिराम,
हिमालय आरोहण का पवित्र प्रतीक
अहा! मेरे भारत अभिराम!

इसी तरह अपनी पुस्तक 'एशिया का हृदय' में रोरिख ने लिखा -

'समस्त महान प्रतीक तथा जननायक, हिमालय रूपी'

उच्चस्थ वेदिका के निकटस्थ वास करते हैं क्योंकि यहीं मानव की आत्मा देवत्व के समीपतम होती है। क्या हिमालय में विचरते आपको तारामण्डल की समीपता का भान नहीं होता ? क्या हिमालय विश्व की समस्त निधियों से परिपूर्ण नहीं है?'

महान रूसी चित्रकार निकोलस रोरिख का रूस के इतिहास और विश्व संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके कार्य-कलापों की परिधि असीम है। 7,000 से अधिक चित्रों के चितेरे, लेखक, पुरातत्त्वविद, विधि-वेत्ता, भूगोल विशेषज्ञ, कवि, इतिहासकार, चिन्तक, वैज्ञानिक, घुमक्कड़, शान्ति-सैनिक, राष्ट्रों के सांस्कृतिक मूल्यों के रक्षक, निस्सन्देह वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक हित के लिए समर्पित कर दिया। उनका जन्म सेंट पीटर्सवर्ग के प्रसिद्ध वकील कोन्स्टाटिन रोरिख और उनकी पत्नी मारिया के घर 9 अक्तूबर, 1874 को हुआ। युवा अवस्था से ही निकोलस की रुचि इतिहास तथा पुरातत्व के विषयों में थी और वे प्राचीन जगहों की खुदाई में भाग लेते थे। चित्रांकन तथा लघुकथा लेखन में भी उनका मन लगता था। उनके घर में आने वाले ख्याति-प्राप्त वैज्ञानिकों के कारण युवा निकोलस की प्रागैतिहासिक वस्तुओं, सिक्कों, खनिजों आदि के इकट्ठा करने की रुचि बढ़ी और उन्होंने पौधों-वृक्षों के अध्ययन हेतु अपनी पौधशाला भी बनाई। 1893 से उन्होंने पीटर्सवर्ग विश्वविद्यालय में 'विधि' तथा 'इम्पीरियल कला अकादमी' में कला का एक साथ अध्ययन कार्य किया।

स्नातक बनने के पश्चात् उनके मन में अपने देश की सदियों पुरानी संस्कृति को समझने की लालसा जन्मी। एतदर्थ 1903-04 में अपनी कलाकार, चिन्तक एवं प्रज्ञावान लेखिका बीवी हेलेना के साथ 40 से भी ऊपर नगरों तथा ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। फलस्वरूप 75 नए चित्रों का जन्म हुआ जिनमें प्राचीन रूसी स्मारको, दुर्गों, गिरजाघरों, किलों, नगर प्राचीरों की शान्ति एवं आध्यात्मिकता की झलक थी।

1909 में रोरिख 'रूसी कला अकादमी' के अकादमिक अर्थात् शिक्षाविद् विद्वान् बन गए।

मास्टर भवन

1916-18 तक फेफड़ों की उग्र समस्या के कारण निकोलस रोरिख रूस के उत्तरी भाग में फिनलैंड की सीमा से सटे करेलिया नगर में सपरिवार रहे। 1917 की क्रान्ति के पश्चात् रूस ने अपनी सीमाएं बन्द कर दीं और रोरिख परिवार अपने देश से कट गया। निकोलस निराश नहीं हुए क्योंकि मित्रों ने उन्हें यूरोप में आने का न्योता दे दिया और स्वीडन में उनके चित्रों की एक विशाल प्रदर्शनी लगी। तत्पश्चात् उन्हें फिनलैंड, नार्वे, डेनमार्क और इंगलैंड में भी बुलाया गया। 1920 में शिकागो कला संस्थान के

निमंत्रण पर वे सपरिवार अमरीका पहुँचे। उनके 400 चित्रों की प्रदर्शनी अमरीका के अनेक नगरों में लगी जिससे उन्हें बड़ी ख्याति मिली। अनेक नये मित्र तथा सहयोगी आकर्षित होकर उनके साथ जुड़ गए तथा सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यों में उन्नति हुई। अत: 1921 में संस्थापक के रूप में नि० रोरिख ने 'मास्टर इन्स्टीच्यूट ऑफ यूनाईटिड आर्ट' का न्यूयार्क में उद्घाटन किया तथा 1923 में रोरिख संग्रहालय का उद्घाटन हुआ जिसमें कलाकारों की उत्कृष्ट कृतियों का संग्रह रखा गया। 1929 में एक 24 मंजिला गगनचुम्बी नया भवन 'मास्टर भवन' महान कला-स्मारक के रूप में खड़ा हुआ क्योंकि रोरिख का मुख्य लक्ष्य था कला के माध्यम द्वारा विश्व के राष्ट्रों को सांस्कृतिक रूप से परस्पर निकट लाना।

उनके अपने शब्दों में "कला तथा सौन्दर्य के प्रति समर्पण में मनुष्य की आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति होती है। समस्त कलाओं को जोड़ने वाले शिक्षालय का आदर्श होता है प्रत्येक छात्र को उसके द्वारा चुने क्षेत्र में तकनीकी श्रेष्ठता प्रदान करना तथा आत्मा और रचनात्मकता के उन आदर्शों को गढ़ना जोकि उसके जीवन में मार्गदर्शक सिद्धान्तों का काम करें।"

अमरीका प्रवास के दौरान रोरिख दम्पत्ति भारत यात्रा की योजना बनाते रहे। अन्ततोगत्वा 1923 के दिसम्बर मास में उनका चिर-स्वप्न साकार हुआ जब वे अपने दो बेटों-जार्ज, प्रसिद्ध ओरियंटल विद्वान तथा स्वेतोस्लाव, चित्रकार तथा कला समीक्षक - के साथ मुम्बई पहुँचे। उन्होंने भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया तथा अन्त में दार्जिलिंग में डेरा जमाया जहां वे मध्य एशियाई अभियान की तैयारियों में जुट गए।

1925 में उनकी मध्यपूर्व एशिया की यात्रा आरम्भ हुई जिसके दौरान उन्होंने प्राचीन पाण्डुलिपियों, कला-कृतियों, पुरातत्व से जुड़े अमूल्य तथ्यों तथा वनस्पति विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, औषधि ज्ञान, दर्शनशास्त्र, नैतिक-शास्त्र से जुड़ी सामग्री इकट्ठी की।

निकोलस रोरिख लिखते हैं, "कला लोगों का दिल होती है। विद्या लोगों का दिमाग होती है। दिल और दिमाग के मिलन द्वारा ही मानवता एक होगी और एक दूसरे को समझ पाएगी।"

निकोलस रोरिख न केवल एक महान कलाकार थे बल्कि एक स्वप्नद्रष्टा भी थे। विश्व के राजनीतिक पटल पर उभरते मतभेदों की परछाइयों को वे भांप गए थे। 1930 के दशक में बनाये गए उनके अनेक चित्रों में मानवता को 'आग से जलते राष्ट्रों' तथा

शान्ति ध्वज

'लास्ट एंजिल' आदि के संकेतों द्वारा सतर्क भी किया गया है। संस्कृति की बदलाव लाने की क्षमता को वे जानते थे; उन्होंने 'संस्कृति द्वारा समझौता' अर्थात् तथाकथित 'रोरिख पैक्ट' बनाया जिसमें मानवता मात्र के सांस्कृतिक स्मारकों की सुरक्षा का प्रावधान था। श्वेत की पृष्ठभूमि में एक बड़े लाल रंग के चक्र में तीन गोलाकार लाल बिन्दुओं वाले शान्ति ध्वज को भी उन्होंने रूप दिया। इस शान्ति-ध्वज के सम्बन्ध में स्वयं निकोलस रोरिख लिखते हैं : "विश्व भर में पाये जाने वाले इस त्रयाड़ी चिह्न के अनेक अर्थ हैं। कुछ लोग इस अनन्त के चक्र को अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रतीक रूप में मानते हैं तो दूसरे इसे धर्म, विज्ञान और कला का प्रतीक समझते हैं।"

'रोरिख अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति ध्वज' के फहराने का मुख्य उद्देश्य था युद्ध के भीषण विनाश एवं बर्बरता से कला तथा विज्ञान के महान स्मारकों और संस्थानों एवं मानव की सृजनात्मक प्रतिभा के प्रतीकों को विभीषिका और जंगलीपन से बचाना। तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट की उपस्थिति में 1935 में विश्व के 21 देशों ने इस सन्धि पर हस्ताक्षर किये।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोरिख के विचारों का स्वागत हुआ। जवाहर लाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जगदीश चन्द्र बोस, एल्बर्ट आइन्स्टाइन, रोम्यां रोलां, बर्नाडशा, टॉमस मान तथा विश्व के अनेक लब्ध-प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और कलाविदों ने 'रोरिख सन्धि' का अनुमोदन किया।

इस महान रूसी कलाकार को श्रद्धांजलि देते हुए जवाहर लाल नेहरू ने कहा था : "जब मैं निकोलस रोरिख के बारे सोचता हूँ तो आश्चर्य-चकित रह जाता हूँ। उनकी गतिविधियों तथा रचनात्मक प्रतिभा पर। एक महान कलाकार, उद्भट विद्वान तथा लेखक, पुरातत्वविद और खोजी के रूप में उन्होंने कितनी ही मानवीय क्षमताओं को ज्योतिर्मान किया। उनका कृतत्व-प्राचुर्य ही अद्भुत है - सहस्रों चित्र और प्रत्येक उत्तम से उत्तम। आप जब इन चित्रों, अधिकतर हिमालय से जुड़े चित्रों को देखते हैं तो मानो आप उस महान पर्वतराज की आत्मा को छू लेते हैं जो सदियों से भारतीय भू-भाग का प्रहरी बनकर अपनी बुलन्दी में खड़ा ताक रहा है। ये चित्र याद दिलाते हैं, हमारे इतिहास की, हमारे दर्शन की, हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर की तथा न केवल भूतकालीन भारत की बल्कि कुछ ऐसी बातों की जो भारत के सन्दर्भ में निरन्तर तथा शाश्वत है। अत: निकोलस रोरिख के प्रति, जिन्होंने इन अभूतपूर्व चित्रों में भारत की आत्मा को संस्थापित किया है, हम ऋणी होने की भावना का संवरण नहीं कर सकते।"

1942 में पं० नेहरू अपनी पुत्री इन्दिरा के साथ निकोलस रोरिख तथा उनके परिवार से मिलने उनकी हिमालयी एस्टेट पहुँचे। विश्व-युद्ध के चलते दोनों इसके अन्तिम परिणामों से सहमत थे। दोनों ने बातचीत के दौरान भविष्य में भारत-रूस सांस्कृतिक सम्बन्धों पर भी चर्चा की।

यदि हम संस्कृति की सभी परिभाषाएं संकलित करें तो वह होगी "सक्रिय आनन्द की समासता, ज्ञान तथा रचनात्मक सौन्दर्य की वेदी।"

द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति पर निकोलस रोरिख अपनी मातृभूमि को लौटना चाहते थे। कहते थे, "मैं शीघ्रातिशीघ्र वहां पहुँचना चाहूँगा ताकि मैं अपने अनुभव और ज्ञान द्वारा अपने देश के लिए योगदान कर सकूँ।"

परन्तु उनका अनेक वर्षों का यह स्वप्न काल-कवलित हो गया। भगवान शिव से सम्बन्धित 13 दिसम्बर के पावन दिन उनका निधन हो गया।

समाधि-स्थल पर एक बड़ी शिला स्थापित की गई है। 'शान्ति-ध्वज' के चिह्न के नीचे हिन्दी में निम्नलिखित वाक्य अंकित हैं :

"भारत के परम मित्र, महर्षि निकोलस रोरिख के शरीर को इस स्थान पर अग्नि को समर्पित किया गया, 15 दिसम्बर, 1947 के दिन।"

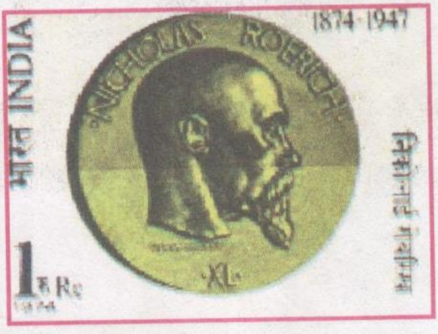

महान चित्रकार निकोलस रोरिख की स्मृति में भारत सरकार ने 9 अक्तूबर 1947 को डाक टिकट जारी किया था।

रोरिख के कुछ अमर चित्र

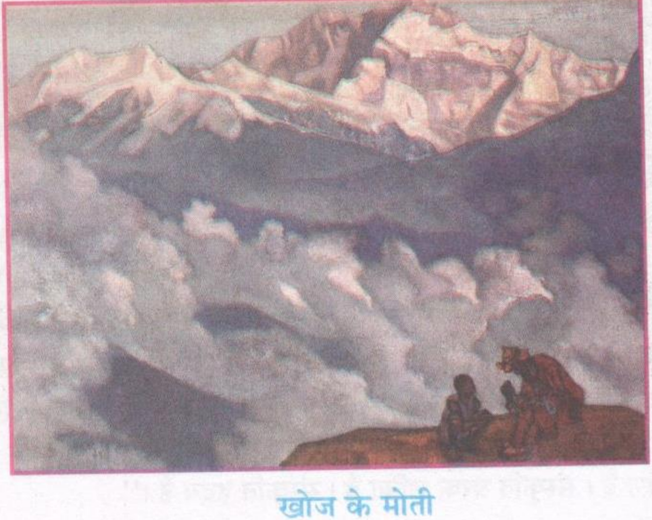

खोज के मोती

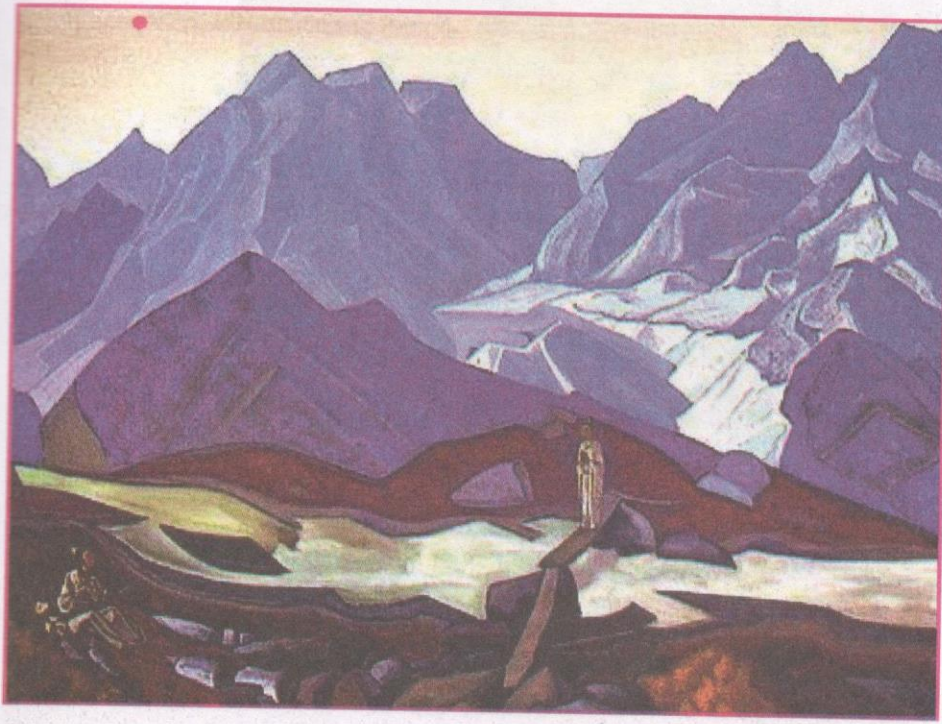

हिमालय

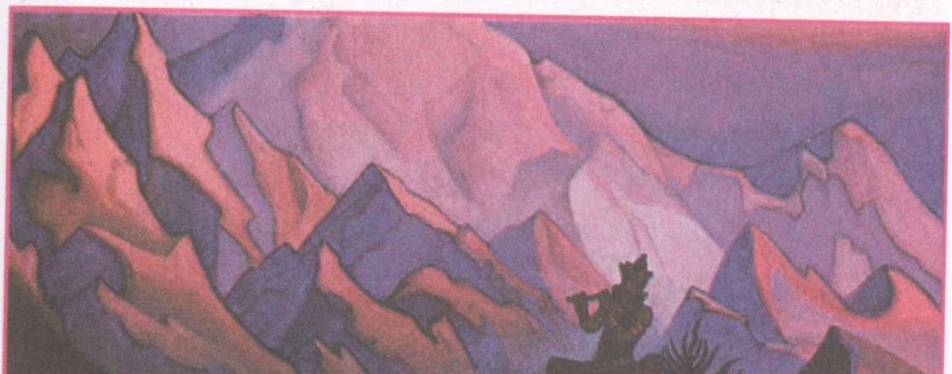

कृष्ण की बांसुरी

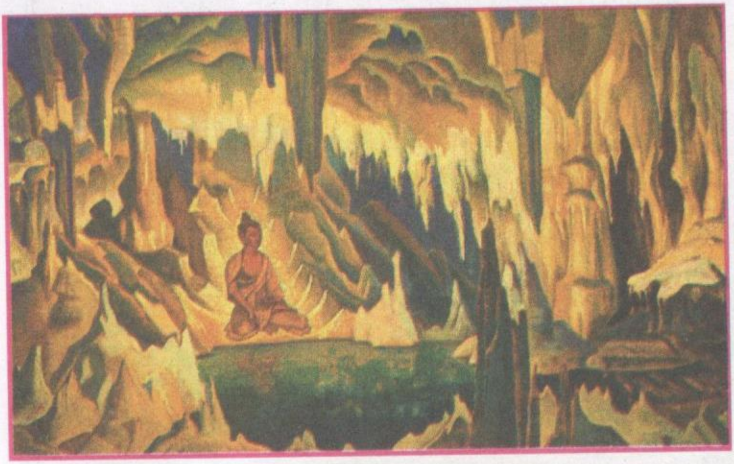

महात्मा बुद्ध

प्रश्न-अभ्यास (क)

1. निकोलस रोरिख की कला के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर का मत क्या था?
2. निकोलस की चित्रकला की मूल प्रेरणा क्या थी?
3. निकोलस रोरिख का पहाड़ों से कैसा रिश्ता था?
4. प्रो० निकोलस अपने लिए रंग कैसे तैयार करते थे?
5. निकोलस के चित्रों में पर्वतों और मनुष्य का सहचर्य कैसे उभरा है?
6. निकोलस रोरिख का भारतीय कलाओं और संस्कृति के प्रति प्यार कैसे दिखाई पड़ता है?
7. निकोलस के चित्रों में कला और प्रकृति का किस रूप में चित्रण हुआ है?
8. हिमालयन शोध अभियान में उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?
9. 'प्रो० रोरिख भारत-रूस मैत्री के हिमायती थे' कैसे पता चलता है?
10. 'रोरिख पैक्ट' क्या था?

प्रश्न-अभ्यास (ख)

प्रश्न-1. निकोलस रोरिख किस देश के रहने वाले थे ? उनका बचपन कैसे बीता ?

प्रश्न-2. निकोलस रोरिख ने यूरोप और अमरीका में चित्रकला के विकास के लिए क्या किया ?

प्रश्न-3. निकोलस द्वारा निर्मित 'शान्ति-ध्वज' का परिचय दीजिए।

प्रश्न-4. निकोलस रोरिख का वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या था?

प्रश्न-5. जवाहर लाल नेहरू ने रोरिख की कला के विषय में क्या कहा है?

प्रश्न-6. रोरिख के चित्रों में ऊँचे पहाड़ किस बात का संकेत देते हैं?

प्रश्न-7. रोरिख के अनुसार संस्कृति की परिभाषा क्या हो सकती है?

शब्दार्थ और टिप्पणी

(क)

व्यक्त	—	प्रकट करना
चाक्षुष	—	आँखों से संबंधित
परिधि	—	घेरा, विस्तार
अनिवर्चनीय	—	जिसे शब्दों में न बता सकें।
उल्लेख	—	वर्णन
स्तब्ध	—	जड़ कर देना, सम्मोहित कर देना।
दृश्यालेखों	—	दृश्यों का चित्रण
निरी	—	केवल
उपत्यकाओं	—	घाटियों
अक्षय	—	अमर, जो कभी नष्ट न हो।
बोधगम्य	—	समझने योग्य
मर्मभरा	—	गहरा, मर्म या दिल को छूने वाला

(ख)

निधि	—	पूंजी, खजाना, सम्पत्ति।
अभिराम	—	सुन्दर
उत्कृष्ट	—	श्रेष्ठ
अभिव्यक्ति	—	प्रकट करना
अन्ततोगतवा	—	आखिरकार
तथाकथित	—	जैसा कहा जाता है
त्रयाड़ी	—	तीन चीजों का समूह
विभीषिका	—	डरावनी मुसीबतें
शाश्वत	—	लगातार, निरन्तर
सार्वभौम	—	सारी पृथ्वी को अपने में समेटने वाला
सामंजस्य	—	संगति, मेल
तारतम्यता	—	निरन्तरता
समरसता	—	सब में घुलमिल जाना
उपलब्धियों	—	प्राप्तियों, Achievements
काल-कवलित	—	मृत्यु का ग्रास बनना।

—o—o—o—